International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

खादर संस्कृति के विविध स्वरूप : भौगोलिक सांस्कृतिक अवलोकन

रेणु कुमारी

शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान विभाग (भूगोल), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा

renudahiya383@gmail.com

डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा

शोध निर्देशक, सामाजिक विज्ञान विभाग (भूगोल), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा

सारांश

हरियाणा की सांस्कृतिक संरचना एकरूप न होकर अनेक भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और पारिस्थितिक अंचलों में विकसित हुई है। खादर उनमें एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक–भौगोलिक क्षेत्र है। सामान्यतः खादर से आशय नदी के सक्रिय बाढ़–मैदान तथा अपेक्षाकृत नवीन जलोढ़ निक्षेपों से है। हरियाणा के संदर्भ में खादर विशेषतः यमुना तथा उससे संबद्ध नदी–मैदानी क्षेत्रों से जुड़ी सांस्कृतिक पहचान का भी संकेतक है। भारत सरकार द्वारा हरियाणा के जिन पारिस्थितिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है, उनमें खादर के साथ बाँगर, बागड़, अहीरवाल, मेवात आदि क्षेत्र भी सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य खादर संस्कृति के विविध स्वरूपों का समग्र अध्ययन करना है। इसमें खादर की भौगोलिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक विकास, कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था, ग्राम–व्यवस्था, परिवार एवं सामाजिक संगठन, भाषा एवं बोली, लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, सांग, पर्व–त्योहार, विवाह–संस्कार, जन्म–मृत्यु संस्कार, वेशभूषा, पगड़ी, भोजन, लोककला, शिल्प, धार्मिक विश्वास, पर्यावरणीय ज्ञान, स्त्री–जीवन, युवा पीढ़ी, शिक्षा, आधुनिकता तथा सांस्कृतिक संरक्षण जैसे पक्षों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि खादर संस्कृति को किसी एक जाति, समुदाय अथवा स्थिर परंपरा की संस्कृति के रूप में नहीं समझा जा सकता। यह नदी, मिट्टी, कृषि, पशुपालन, ग्राम–समाज और विभिन्न समुदायों के दीर्घकालीन पारस्परिक संपर्क से निर्मित जीवंत सांस्कृतिक प्रक्रिया है। खादर की संस्कृति में परंपरा और आधुनिकता का सह–अस्तित्व दिखाई देता है। एक ओर लोकगीत, लोककथा, सांग, पारंपरिक भोजन, वेशभूषा और सामाजिक रीति–रिवाज आज भी सांस्कृतिक पहचान बनाए हुए हैं, दूसरी ओर शिक्षा, शहरीकरण, डिजिटल मीडिया, कृषि–यंत्रीकरण और रोजगार के बदलते अवसर नई सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को जन्म दे रहे हैं।

मुख्य शब्दावली : खादर, हरियाणा, लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य, लोकगीत, लोककथा, सांग, ग्रामीण संस्कृति, कृषि संस्कृति, पर्यावरण।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी बहुलता और स्थानीय जीवन–रूपों की समृद्धि है। भारत के किसी भी प्रदेश की व्यापक सांस्कृतिक पहचान को समझने के लिए उसके स्थानीय अंचलों की संस्कृति का अध्ययन आवश्यक है। हरियाणा इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। वर्तमान हरियाणा का सांस्कृतिक स्वरूप अनेक क्षेत्रीय परंपराओं से निर्मित हुआ है। बाँगर, खादर, बागड़, अहीरवाल, मेवात, ब्रज तथा अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों ने हरियाणा की सामूहिक पहचान को अलग–अलग रंग प्रदान किए हैं। इस विविधता के भीतर खादर संस्कृति का अपना विशिष्ट स्थान है।

'खादर' मूलतः भूगोल से संबंधित शब्द है। उत्तर भारतीय मैदानों में नदी के समीप स्थित नवीन जलोढ़ तथा बाढ़ से प्रभावित निम्न भूमि को सामान्यतः खादर कहा जाता है, जबकि अपेक्षाकृत पुरानी और ऊँची जलोढ़ भूमि को बाँगर कहा जाता है। किंतु जब किसी भू–भाग में मानव समुदाय लंबे समय तक निवास करता है तो वहाँ की भौगोलिक विशेषताएँ उसके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करती हैं। फलतः खादर केवल मिट्टी अथवा भूमि का नाम नहीं रह जाता, बल्कि जीवन–पद्धति का संकेतक बन जाता है।

खादर क्षेत्र की संस्कृति को समझने के लिए नदी और मनुष्य के संबंध को समझना आवश्यक है। नदी कृषि के लिए जल और उपजाऊ मिट्टी उपलब्ध कराती है, परंतु बाढ़ का खतरा भी उत्पन्न करती है। इस प्रकार नदी यहाँ वरदान और चुनौती दोनों है। कृषि, पशुपालन, ग्राम–व्यवस्था, आवास, भोजन, लोकविश्वास और लोकसाहित्य पर नदी तथा जलोढ़ भूमि का प्रभाव देखा जा सकता है। यही कारण है कि खादर संस्कृति का अध्ययन केवल लोक–साहित्यिक अध्ययन नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और सामाजिक इतिहास का भी अध्ययन है।

हरियाणा की आधिकारिक सांस्कृतिक सामग्री में खादर को एक विशिष्ट पारिस्थितिक–सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में स्वीकार किया गया है। इसलिए वर्तमान शोध में 'खादर संस्कृति' शब्द का प्रयोग किसी एक जातीय समूह के लिए न करके उस नदी–मैदानी भू–दृश्य में विकसित साझा सांस्कृतिक जीवन के लिए किया गया है। इस दृष्टिकोण से खादर संस्कृति एक गतिशील और परिवर्तनशील सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में सामने आती है।

खादर संस्कृति : अवधारणा एवं परिभाषा

खादर संस्कृति की अवधारणा को स्पष्ट करना इस अध्ययन की पहली आवश्यकता है। 'खादर' शब्द का प्रयोग मूलतः नदी द्वारा निर्मित नवीन जलोढ़ भूमि के लिए किया जाता है। गंगा–यमुना तथा उत्तर भारतीय मैदानों के संदर्भ में खादर और बाँगर का विभाजन भौगोलिक और मृदा संबंधी आधारों पर किया जाता है। खादर सामान्यतः नदी के समीप स्थित निम्न क्षेत्र होता है, जहाँ बाढ़ के कारण समय–समय पर नई जलोढ़ मिट्टी जमा होती है।

जब इस भौगोलिक क्षेत्र में मानव बसावट स्थायी या अर्द्धस्थायी रूप ग्रहण करती है, तब स्थानीय समाज अपने पर्यावरण के अनुकूल विशिष्ट जीवन–पद्धतियाँ विकसित करता है।

खेतों का उपयोग, फसल का चयन, पशुपालन, आवास का स्थान, जल–स्रोतों का प्रयोग, धार्मिक मान्यताएँ और सामाजिक व्यवहार प्राकृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार भूगोल धीरे–धीरे संस्कृति का आधार बन जाता है।

खादर संस्कृति को किसी एक समुदाय की संस्कृति मानना उचित नहीं होगा। इसमें विभिन्न सामाजिक समूहों की भागीदारी रही है। नदी के किनारे व्यापार, कृषि, आवागमन और वैवाहिक संबंधों के कारण सांस्कृतिक आदान–प्रदान निरंतर चलता रहा। फलतः भाषा, गीत, भोजन, वेशभूषा और लोकविश्वास में पड़ोसी क्षेत्रों की छाप भी दिखाई देती है।

इस शोध में खादर संस्कृति को तीन परस्पर संबंधित स्तरों पर देखा गया है। पहला स्तर भौगोलिक है, जिसमें नदी, मिट्टी, जल और कृषि आते हैं। दूसरा स्तर सामाजिक है, जिसमें परिवार, ग्राम, जाति–बिरादरी, श्रम और सामुदायिक संस्थाएँ शामिल हैं। तीसरा स्तर सांस्कृतिक है, जिसमें लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, पर्व, वेशभूषा, भोजन, धार्मिक विश्वास और कला सम्मिलित हैं। इन तीनों स्तरों को अलग–अलग देखने के बजाय परस्पर संबद्ध रूप में देखना अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

अध्ययन की पद्धति एवं स्रोत

प्रस्तुत शोध का स्वरूप मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और सांस्कृतिक–मानवशास्त्रीय है। खादर संस्कृति का अध्ययन करते समय लिखित स्रोतों के साथ मौखिक परंपराओं को भी महत्त्व दिया गया है। लोकगीत, लोककथा, कहावतें, विवाह–गीत, धार्मिक आख्यान और लोकनाट्य किसी समाज के जीवनानुभव को समझने के महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

शोध में हरियाणा सरकार के कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, भारत सरकार की सांस्कृतिक सामग्री, विश्वविद्यालयों की अध्ययन–सामग्री तथा हरियाणा के लोकसाहित्य पर प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया गया है। हरियाणवी लोकसाहित्य में लोकगीत, लोककथा, भजन, सांग और अन्य साहित्यिक विधाएँ जनजीवन के प्रतिबिंब के रूप में देखी जाती हैं।

क्षेत्रीय संस्कृति के अध्ययन में एक महत्त्वपूर्ण समस्या यह है कि मौखिक सामग्री समय के साथ बदलती रहती है। एक ही लोककथा अलग–अलग गाँवों में अलग रूप में सुनाई जा सकती है। इसी प्रकार किसी विवाह–गीत की पंक्तियों में स्थानीय बोली के अनुसार परिवर्तन हो सकता है। इसलिए लोकसाहित्य को स्थिर पाठ न मानकर जीवंत परंपरा के रूप में ग्रहण किया गया है।

इस अध्ययन में इतिहास, भूगोल, लोकसाहित्य और समाजशास्त्र के अंतर्विषयक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। इससे खादर संस्कृति को केवल अतीत की वस्तु के रूप में न देखकर वर्तमान में सक्रिय सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में समझने में सहायता मिलती है।

खादर का भौगोलिक स्वरूप

खादर संस्कृति की आधारभूमि नदी और जलोढ़ मैदान है। नदी द्वारा लाए गए महीन अवसादों के कारण खादर की मिट्टी सामान्यतः कृषि के लिए उपयोगी होती है। गंगा–यमुना के मैदानों

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

में भांगर और खादर की भौगोलिक संरचना मानव बसावट के स्वरूप को प्रभावित करती रही है।

हरियाणा में यमुना–खादर का विशेष महत्त्व है। यमुना नदी ने केवल जल उपलब्ध नहीं कराया, बल्कि कृषि, परिवहन, धार्मिक गतिविधियों और बाजार–व्यवस्था को भी प्रभावित किया। नदी के किनारे रहने वाले समुदायों ने बाढ़ के साथ जीवन जीने के लिए स्थानीय अनुभव पर आधारित अनेक उपाय विकसित किए।

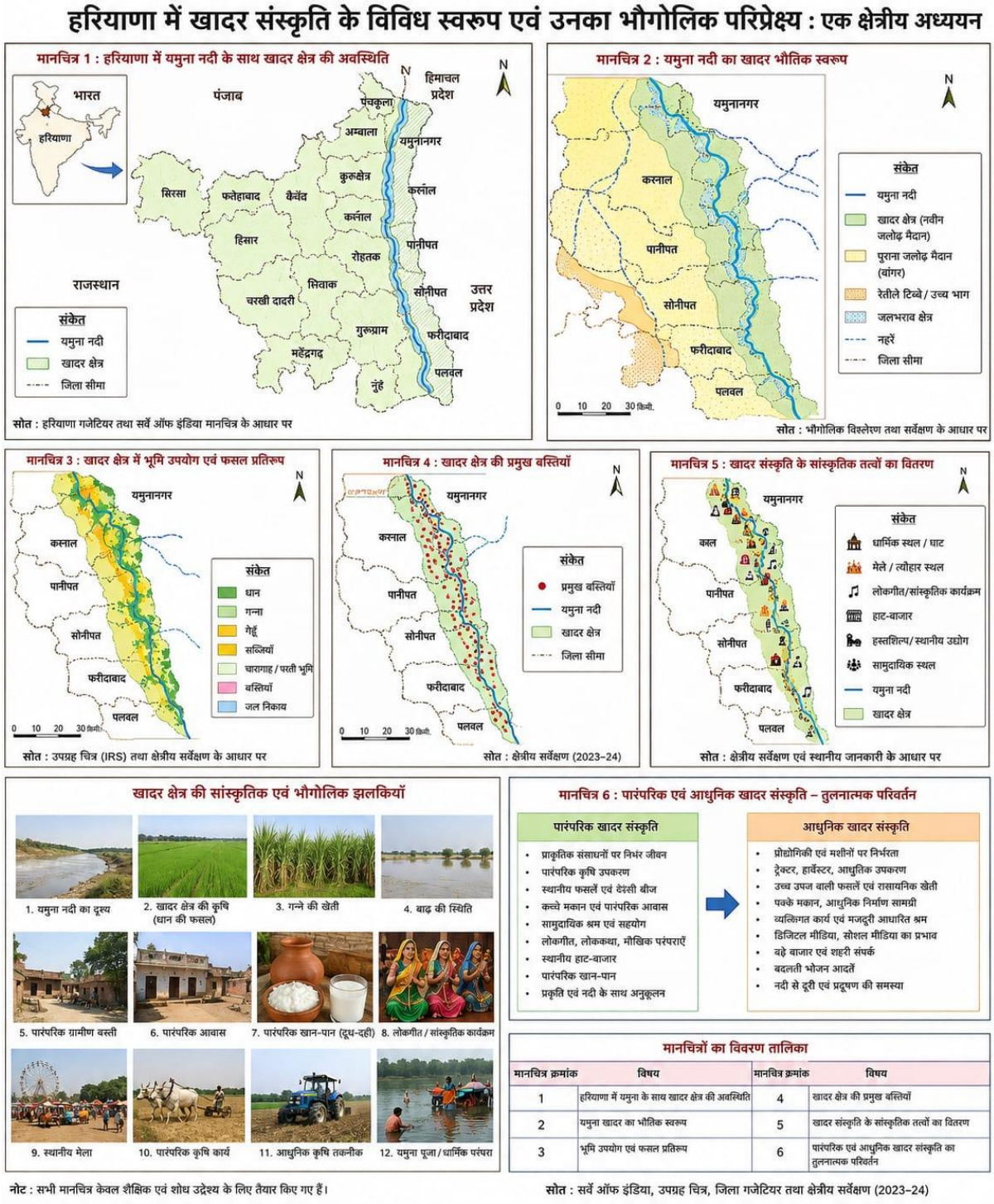

खादर क्षेत्र का भू–दृश्य सामान्यतः समतल है। खेत, चरागाह, नदी की पुरानी धाराएँ, मौसमी जलधाराएँ और गाँव इसके प्रमुख तत्व हैं। वर्षा और बाढ़ की प्रकृति के अनुसार कृषि गतिविधियों में परिवर्तन होता है। यह पर्यावरणीय अनुकूलन खादर संस्कृति का मूल तत्व है। जलमार्ग और स्थलमार्ग दोनों ने यहाँ सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ाया। इस कारण खादर में पड़ोसी सांस्कृतिक क्षेत्रों की भाषिक और सामाजिक विशेषताएँ भी मिलती हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हरियाणा और गंगा–यमुना का मैदान प्राचीन काल से मानव बसावट और आवागमन का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। पुरातात्त्विक अन्वेषणों से इस व्यापक भूभाग में पाषाणकालीन, नवपाषाण, ताम्रपाषाण, ऐतिहासिक और मध्यकालीन सांस्कृतिक स्तरों की जानकारी प्राप्त हुई है। नदी–मैदानों में कृषि की संभावनाओं ने मानव बसावट को प्रोत्साहित किया। समय के साथ गाँव, बाजार और व्यापारिक मार्ग विकसित हुए। विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के उदय और पतन के साथ जनसंख्या तथा आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तन होता रहा।

मध्यकालीन काल में धार्मिक यात्राओं और व्यापारिक संपर्कों ने स्थानीय संस्कृति को और अधिक विविध बनाया। लोककथाओं और सांगों में पौराणिक कथाओं के साथ ऐतिहासिक और अर्द्ध–ऐतिहासिक पात्रों की उपस्थिति इस दीर्घकालीन सांस्कृतिक आदान–प्रदान को दर्शाती है। खादर संस्कृति इसलिए किसी एक काल की उपज नहीं है। यह प्राचीन नदी–आधारित जीवन, मध्यकालीन ग्रामीण समाज और आधुनिक कृषि–आर्थिक परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया से निर्मित हुई है।

नदी खादर की सांस्कृतिक चेतना

नदी खादर समाज में भौगोलिक इकाई से अधिक सांस्कृतिक प्रतीक है। जल, उर्वरता, जीवन, मृत्यु, यात्रा और धार्मिक विश्वासों के साथ नदी का संबंध स्थापित होता है। बाढ़ जहाँ विनाश का कारण बन सकती है, वहीं बाढ़ नई मिट्टी भी लाती है। इस द्वंद्वात्मक अनुभव ने ग्रामीण मानस को प्रभावित किया है। वर्षा के लिए प्रार्थना, जल से जुड़े धार्मिक अनुष्ठान, नदी–स्नान और स्थानीय मेले इसी सांस्कृतिक चेतना के उदाहरण हैं। नदी से संबंधित लोकविश्वासों में पर्यावरणीय अनुभव की अनेक परतें छिपी होती हैं। लोकगीतों में नदी प्रायः दूरी, विरह और यात्रा का प्रतीक भी बनती है। विवाह के बाद मायके से दूर गई स्त्री के अनुभव में नदी सीमा और दूरी का प्रतीक बन सकती है। इसी प्रकार नदी व्यापार और आवागमन का मार्ग भी है। इस प्रकार खादर संस्कृति में नदी जीवन की केंद्रीय धुरी है। नदी के बिना खादर की संस्कृति की कल्पना अधूरी है।

कृषि–प्रधान जीवन

खादर संस्कृति की आर्थिक संरचना में कृषि का सर्वोच्च स्थान है। उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी ने यहाँ खेती को प्रमुख व्यवसाय बनाया। गेहूँ, धान, चारा, सब्जियाँ तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप अन्य फसलें उगाई जाती हैं।

कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं बल्कि सांस्कृतिक जीवन का आधार है। वर्ष का समय बोआई, सिंचाई, निराई, कटाई और भंडारण के चरणों में विभाजित होता है। अनेक लोकगीत और कहावतें कृषि–चक्र से संबंधित हैं।यहां का किसान अपने जीवन के विभिन्न भोज्य पदार्थों का आज आस्वादान करता है परंतु बाजरे की रोटी एवं बथुए का साग पौष्टिकता तथा स्वादिष्ट के कारण उसे अत्यंत प्रिय है बाजरे की शक्ति का बखान उसी के मुख से प्रस्तुत है

बाजार कहे मैं बड़ा अलबेल्ला,
दो मुस्सल तैं लड़ूं अकेल्ला,
जै मेरी नाजो खिचड़ी खाय,
फूलफाल कोठी हो जाए।

हरित क्रांति के बाद ट्रैक्टर, ट्यूबवेल, उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक और कृषि मशीनरी ने उत्पादन प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किया। श्रम का स्वरूप बदला और कृषि अधिक बाजार–उन्मुख हुई। इसके बावजूद पारंपरिक कृषि ज्ञान का महत्त्व समाप्त नहीं हुआ। मौसम पहचानना, मिट्टी की नमी समझना, पशुओं का उपयोग और स्थानीय फसलों का चयन आज भी ग्रामीण अनुभव का हिस्सा है।

पशुपालन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था

कृषि के साथ पशुपालन खादर की अर्थव्यवस्था का दूसरा महत्त्वपूर्ण आधार है। गाय, भैंस, बैल और अन्य पशुओं ने दूध, कृषि श्रम तथा घरेलू अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पारंपरिक कृषि व्यवस्था में पशु खेत के उत्पादन–चक्र का हिस्सा थे। बैलों से जुताई होती थी और गोबर का उपयोग खाद के रूप में किया जाता था। दूध, दही, घी और छाछ भोजन संस्कृति के भी महत्त्वपूर्ण अंग बने। आधुनिक कृषि मशीनरी के कारण बैलों की उपयोगिता कम हुई है, लेकिन दुग्ध उत्पादन के कारण भैंस और गाय अभी भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण हैं। पशुपालन ने सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित किया। पशुधन कभी आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक रहा है। पशुओं से संबंधित लोककथाएँ और कहावतें ग्रामीण जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैं।

धरती माता नैं हरयो करियो,
गऊ के जाए नैं हरयो करयो

ग्राम–व्यवस्था

खादर संस्कृति का वास्तविक केंद्र गाँव है। गाँव केवल आवासीय क्षेत्र नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का समुच्चय है। चौपाल, खेत, मंदिर, कुआँ, तालाब, रास्ते और बाजार सामुदायिक जीवन को जोड़ते हैं।बाढ़ की संभावना के कारण कई नदी–मैदानी क्षेत्रों में सुरक्षित स्थानों पर आवास बनाने की परंपरा रही है। मकानों, पशुशालाओं और खेतों का विन्यास स्थानीय पर्यावरण से जुड़ा रहा है। चौपाल पारंपरिक रूप से पुरुषों के सामाजिक संवाद का प्रमुख स्थान रही है। पंचायत, विवाह, विवाद, कृषि और सामाजिक निर्णयों पर

यहाँ विचार–विमर्श होता रहा है। आधुनिक पंचायत व्यवस्था, शिक्षा, मोबाइल संचार और सड़क संपर्क ने ग्राम–व्यवस्था को बदल दिया है। फिर भी सामुदायिक सहयोग की भावना आज भी ग्रामीण जीवन की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

परिवार एवं सामाजिक संगठन

परिवार खादर संस्कृति की मूल सामाजिक इकाई है। पारंपरिक संयुक्त परिवार में आर्थिक संसाधन, श्रम और जिम्मेदारियाँ साझा होती थीं। कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था में संयुक्त परिवार आर्थिक रूप से उपयोगी व्यवस्था थी। आधुनिक शिक्षा, रोजगार और शहरीकरण ने परिवार की संरचना में परिवर्तन किया है। जाति, बिरादरी और गोत्र जैसी संस्थाओं का विवाह और सामाजिक संबंधों में ऐतिहासिक प्रभाव रहा है। आधुनिक शिक्षा और कानूनी जागरूकता ने पारंपरिक सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन उत्पन्न किया है। खादर संस्कृति का समाज इसलिए परंपरा और परिवर्तन दोनों का उदाहरण है।

भाषा और लोकबोली

भाषा संस्कृति का सबसे जीवंत रूप है। खादर क्षेत्र में हरियाणवी, कौरवी, ब्रज तथा पश्चिमी हिंदी की विभिन्न भाषिक विशेषताओं का संपर्क दिखाई दे सकता है। क्षेत्रीय बोलियाँ राजनीतिक सीमाओं से अधिक लचीली होती हैं। लोकभाषा में कृषि, पशुपालन, मौसम, रिश्तेदारी और सामाजिक व्यवहार से जुड़े अनेक विशिष्ट शब्द होते हैं। कहावतें और मुहावरे सामूहिक अनुभव को संक्षिप्त रूप में व्यक्त करते हैं। हरियाणवी लोकसाहित्य में भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का माध्यम है। लोकगीतों और सांग में स्थानीय भाषा का प्रयोग दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। आधुनिक शिक्षा के कारण मानक हिंदी और अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ रहा है, किंतु घरेलू जीवन, हास्य, लोकगीत और सामाजिक बातचीत में क्षेत्रीय बोली अभी भी प्रभावशाली है।

लोकगीत

खादर संस्कृति की पहचान में लोकगीतों का महत्त्व अत्यधिक है। लोकगीत सामुदायिक अनुभव से उत्पन्न होते हैं और पीढ़ियों तक मौखिक रूप में चलते हैं। विवाह–गीत, सावन–गीत, तीज–गीत, फसल–गीत, जन्म–गीत और विदाई–गीत ग्रामीण समाज के भावनात्मक जीवन को अभिव्यक्त करते हैं। विशेष रूप से महिलाओं के गीतों में मायका, ससुराल, प्रेम, विरह, श्रम और पारिवारिक संबंधों का चित्रण मिलता है। कृषि–कार्य से जुड़े गीत श्रम को आनंद में बदलते हैं। सामूहिक गायन सामाजिक एकता को मजबूत करता है। मशीनों और बदलती जीवन–शैली ने सामूहिक श्रम के अवसर कम किए हैं, इसलिए कुछ पारंपरिक गीतों का संदर्भ कमजोर हुआ है। फिर भी विवाह और सांस्कृतिक आयोजनों में लोकगीत आज भी जीवित हैं।

लोककथा

लोककथा खादर की लोकस्मृति का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हरियाणा के विभिन्न सांस्कृतिक अंचलों की लोककथाओं में पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और हास्यपूर्ण कथाएँ मिलती

हैं। लोककथा किसी समाज का औपचारिक इतिहास नहीं होती, लेकिन वह समाज की मानसिकता, नैतिकता, भय, आकांक्षा और हास्य को समझने में महत्त्वपूर्ण होती है। किसान, स्त्री, व्यापारी, राजा, साधु, पशु और सामान्य ग्रामीण पात्रों के माध्यम से जीवन–मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। चतुर व्यक्ति का शक्तिशाली व्यक्ति पर विजय प्राप्त करना लोकमानस की बुद्धि–प्रधानता को दर्शाता है। आधुनिक डिजिटल माध्यमों ने लोककथाओं के प्रसार के नए अवसर प्रदान किए हैं। यदि इन्हें स्थानीय बोली और संदर्भ सहित रिकॉर्ड किया जाए तो भविष्य के शोध के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत उपलब्ध हो सकते हैं।

सांग एवं लोकनाट्य

हरियाणा की लोकनाट्य परंपरा में सांग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हरियाणा सरकार के अनुसार लोक रंगमंच में संगीत, नृत्य, कविता, संवाद और अभिनय का समन्वय मिलता है। सांग में पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रेमकथात्मक और सामाजिक विषय प्रस्तुत किए जाते हैं।खादर क्षेत्र इस व्यापक हरियाणवी लोकनाट्य परंपरा से जुड़ा रहा है। खुला मंच, स्थानीय बोली और सामूहिक दर्शक सांग को लोकजीवन के निकट रखते हैं। सांग में हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक समस्याओं पर टिप्पणी की जाती है। यह मनोरंजन के साथ शिक्षा और सामाजिक आलोचना का भी माध्यम रहा है। आधुनिक मनोरंजन माध्यमों के कारण सांग की पारंपरिक लोकप्रियता में कमी आई है, लेकिन सांस्कृतिक उत्सवों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से इसके संरक्षण की नई संभावनाएँ बनी हैं।

हास्य, व्यंग्य और वीरता

हरियाणवी लोकजीवन में हास्य और व्यंग्य की परंपरा विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। लोककथाओं, कहावतों और सांग में सामाजिक व्यवहार तथा मानवीय कमजोरियों पर हास्यपूर्ण टिप्पणी की जाती है।सांग में हास्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि सामाजिक आलोचना का साधन भी है। पारिवारिक संबंध, सामाजिक प्रतिष्ठा, लोभ, अहंकार और सत्ता जैसे विषयों पर लोक कलाकार हास्य के माध्यम से टिप्पणी करते हैं। वीरता भी ग्रामीण लोकमानस का प्रमुख मूल्य है। यहाँ वीरता का अर्थ केवल युद्ध नहीं, बल्कि कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों, श्रम और आर्थिक चुनौतियों से संघर्ष करने की क्षमता भी है। हास्य और वीरता दोनों मिलकर आत्मविश्वास तथा सामुदायिक पहचान का निर्माण करते हैं। ये खादर संस्कृति के मानसिक संसार को समझने की महत्त्वपूर्ण कुंजी हैं।

पर्व एवं त्योहार

पर्व–त्योहार खादर समाज में सामाजिक एकता के प्रमुख माध्यम हैं। तीज, सावन, होली, दीपावली, जन्माष्टमी, नवरात्र तथा स्थानीय मेले ग्रामीण जीवन को सामुदायिक स्वरूप प्रदान करते हैं। त्योहारों में धार्मिक अनुष्ठान के साथ भोजन, वस्त्र, गीत, रिश्तेदारी और बाजार भी जुड़े होते हैं। इसलिए त्योहार धार्मिक और सामाजिक दोनों संस्थाएँ हैं। तीज और सावन महिलाओं के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं। झूले, गीत और मायके जाने की परंपरा स्त्री–जीवन के भावनात्मक पक्ष को व्यक्त करती है। आधुनिक समय में त्योहारों का बाजारवादी स्वरूप

बढ़ा है, फिर भी सामूहिक मिलन की आवश्यकता ने इनकी सांस्कृतिक भूमिका को बनाए रखा है।

विवाह–संस्कार

विवाह खादर संस्कृति में सामाजिक संबंधों का महत्त्वपूर्ण आधार है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं, बल्कि परिवारों और समुदायों के बीच संबंधों का निर्माण भी है। सगाई, हल्दी, मेहंदी, विवाह, फेरों और विदाई से जुड़े अनेक लोकाचार स्थानीय रूप में पाए जाते हैं। महिलाओं के विवाह–गीतों में हास्य, व्यंग्य, प्रेम, पीड़ा और विदाई की भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। गोत्र, बिरादरी और पारिवारिक संबंधों का ऐतिहासिक प्रभाव विवाह व्यवस्था पर रहा है। आधुनिक शिक्षा और कानून ने विवाह की प्रक्रिया में परिवर्तन किया है। आज विवाह समारोह अधिक खर्चीले और प्रदर्शनात्मक हो गये हैं। इसके विपरीत सरल विवाह की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। इसलिए विवाह–संस्कार में परंपरा और आधुनिकता दोनों दिखाई देते हैं।

जन्म एवं मृत्यु संस्कार

जन्म संस्कार परिवार और समुदाय में नए सदस्य के स्वागत का माध्यम हैं। नामकरण, आशीर्वाद और मंगलगीत बच्चे को सामाजिक पहचान प्रदान करते हैं। दादी–नानी की लोरियाँ और लोककथाएँ सांस्कृतिक ज्ञान के हस्तांतरण का माध्यम हैं। इनके माध्यम से बच्चे को भाषा, नैतिकता और स्थानीय स्मृति से परिचित कराया जाता है।मृत्यु संस्कारों में शोक और सामुदायिक सहयोग का विशेष महत्त्व है। ग्रामीण समाज में संकट की स्थिति में पड़ोसी और रिश्तेदार परिवार के साथ खड़े होते हैं। इन संस्कारों में परिवर्तन हुआ है, लेकिन सामाजिक सहभागिता का मूल भाव अभी भी बना हुआ है।

वेशभूषा एवं पगड़ी

वेशभूषा किसी समाज के सौंदर्य–बोध, जलवायु, श्रम और सामाजिक पहचान से जुड़ी होती है। हरियाणा के विभिन्न अंचलों में पगड़ी के अनेक रूप मिलते हैं और खादर भी इस क्षेत्रीय परंपरा का हिस्सा है। पुरुषों के लिए पगड़ी सम्मान, प्रतिष्ठा और पहचान का प्रतीक रही है। महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा में दामन, कुर्ती, ओढ़नी और अन्य स्थानीय रूप देखने को मिलते हैं। आधुनिक कपड़ों के कारण पारंपरिक पहनावे का दैनिक प्रयोग कम हुआ है। किंतु विवाह, लोकनृत्य और सांस्कृतिक समारोहों में पारंपरिक वस्त्र आज भी पहचान के प्रतीक के रूप में प्रयोग होते हैं। यह परिवर्तन संस्कृति के समाप्त होने का प्रमाण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीकों के नए संदर्भ में पुनः उपयोग का उदाहरण है।

खाद्य संस्कृति

खादर की खाद्य संस्कृति कृषि और पशुपालन पर आधारित रही है। गेहूँ, बाजरा, ज्वार, दालें, दूध, दही, छाछ, घी और मौसमी सब्जियाँ पारंपरिक भोजन के प्रमुख अंग रहे हैं।भोजन स्थानीय जलवायु और कृषि–चक्र से जुड़ा है। गर्मियों में छाछ और सर्दियों में बाजरे जैसे ऊर्जादायक खाद्य पदार्थ ग्रामीण जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं से जुड़े रहे हैं। अतिथि–सत्कार हरियाणवी ग्रामीण संस्कृति का महत्त्वपूर्ण मूल्य है। सामूहिक भोजन सामाजिक

संबंधों को मजबूत करता है। आज पैकेज्ड खाद्य पदार्थों और बाजार–आधारित भोजन का प्रभाव बढ़ा है, लेकिन स्थानीय खाद्य पदार्थों का महत्त्व पुनः बढ़ रहा है। मोटे अनाजों के प्रति आधुनिक रुचि इसका उदाहरण है।

लोककला और शिल्प

खादर की लोककला स्थानीय सामग्री और ग्रामीण जीवन की आवश्यकताओं से जुड़ी रही है। मिट्टी, लकड़ी, कपड़ा, रस्सी, बाँस और धातु से उपयोगी एवं सजावटी वस्तुएँ बनाई जाती रही हैं। चारपाई, मूढ़ा, टोकरी, रस्सी और कृषि–उपकरण केवल उपयोगी वस्तुएँ नहीं, बल्कि स्थानीय शिल्पज्ञान के प्रतीक हैं। इन वस्तुओं के निर्माण में पीढ़ियों से संचित तकनीकी ज्ञान शामिल होता है। मशीन निर्मित वस्तुओं के कारण पारंपरिक शिल्प का बाजार कमजोर हुआ है। फिर भी सांस्कृतिक मेलों और हस्तशिल्प बाजारों ने इनके पुनर्जीवन की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। लोकशिल्प के संरक्षण के लिए केवल वस्तुओं को संग्रहालय में रखना पर्याप्त नहीं है।

धार्मिक विश्वास और लोकधर्म

खादर संस्कृति में धार्मिक जीवन औपचारिक धार्मिक संस्थाओं से अधिक व्यापक है। ग्राम–देवता, स्थानीय देवस्थान, मंदिर, पीर–स्थान, नदी और वृक्ष से जुड़े विश्वास लोकधर्म का निर्माण करते हैं। वर्षा, फसल, पशुधन और परिवार की सुरक्षा से संबंधित धार्मिक अनुष्ठान ग्रामीण जीवन में महत्त्वपूर्ण रहे हैं। लोकधर्म में अनेक परंपराओं के सह–अस्तित्व के उदाहरण भी मिलते हैं। आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक चेतना के कारण अनेक पुराने विश्वास बदल रहे हैं। फिर भी मेले, व्रत, मंदिर और पारिवारिक धार्मिक अनुष्ठान सामाजिक जीवन में सक्रिय हैं। लोकविश्वासों को केवल अंधविश्वास मानना उनके सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ को समझने में बाधा उत्पन्न करता है। उनमें लोकज्ञान और सामुदायिक स्मृति की परतें भी हो सकती हैं।

पर्यावरणीय चेतना

खादर संस्कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका पर्यावरणीय स्वरूप है। नदी के जलस्तर, वर्षा, मिट्टी की नमी, पशुओं के व्यवहार और मौसम के संकेतों को पहचानना स्थानीय ज्ञान का हिस्सा रहा है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में रहने वाले समुदायों के लिए यह ज्ञान जीवन–रक्षा का साधन भी रहा है। अनाज और पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखना, जल के प्रवाह की दिशा पहचानना और फसल का समय निर्धारित करना अनुभव से सीखा जाता रहा है।आज जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा और भूजल दोहन ने नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान के संयोजन से इन समस्याओं का बेहतर समाधान संभव है।

खादर संस्कृति में स्त्री की भूमिका

खादर संस्कृति के निर्माण में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। घरेलू कार्यों के साथ कृषि, पशुपालन, खाद्य–संरक्षण और बच्चों के पालन–पोषण में महिलाओं का योगदान रहा है। लोकगीतों की परंपरा के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण

रही। विवाह, सावन, तीज और अन्य अवसरों पर गाए जाने वाले गीत स्त्री–अनुभव की सामूहिक अभिव्यक्ति हैं। महिलाओं की शिक्षा और रोजगार ने उनके सामाजिक जीवन को बदला है। पंचायतों में भागीदारी और स्वयं सहायता समूहों ने सार्वजनिक जीवन में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं।

फिर भी घरेलू श्रम, संपत्ति–अधिकार और सामाजिक रूढ़ियों जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसलिए खादर संस्कृति के अध्ययन में महिला को केवल परंपरा की वाहक नहीं, बल्कि संस्कृति की सक्रिय निर्माता के रूप में देखना चाहिए।

युवा पीढ़ी

युवा पीढ़ी खादर संस्कृति में परिवर्तन का सबसे सक्रिय माध्यम है। शिक्षा, रोजगार, मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने युवाओं की दुनिया को गाँव की भौगोलिक सीमाओं से बाहर विस्तारित किया है। आज युवा एक साथ लोकगीत और आधुनिक संगीत सुन सकता है, पारंपरिक त्योहार मना सकता है और आधुनिक जीवनशैली अपना सकता है। यह सांस्कृतिक मिश्रण आधुनिकता की स्वाभाविक प्रक्रिया है। डिजिटल माध्यमों ने हरियाणवी लोकगीतों, हास्य, कथाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को व्यापक दर्शक दिए हैं। हरियाणा के सांस्कृतिक उत्सवों में खादर सहित विभिन्न अंचलों की परंपराओं को युवा मंच मिल रहा है।यदि युवा पीढ़ी को संस्कृति के दस्तावेजीकरण और प्रस्तुतीकरण में सहभागी बनाया जाए तो संरक्षण अधिक प्रभावी हो सकता है।

शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण

शिक्षण संस्थाएँ स्थानीय संस्कृति के दस्तावेजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में लोकसाहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र के अध्ययन से खादर संस्कृति को अकादमिक आधार मिलता है। मौखिक इतिहास परियोजनाओं के माध्यम से बुजुर्गों से लोकगीत, लोककथा, कहावतें, विवाह–रीति और स्थानीय इतिहास रिकॉर्ड किया जा सकता है। यह सामग्री भविष्य के शोधार्थियों के लिए प्राथमिक स्रोत बन सकती है। विद्यालयों में स्थानीय इतिहास और संस्कृति को पाठ्य गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है। विद्यार्थियों को अपने गाँव के पुराने कुएँ, मंदिर, तालाब, लोककथा, पारंपरिक औजार और स्थानीय शब्दावली का दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इस प्रकार संस्कृति संरक्षण केवल सरकारी संस्थाओं का कार्य न रहकर सामुदायिक प्रक्रिया बन सकता है।

मीडिया और डिजिटल संस्कृति

डिजिटल मीडिया ने खादर संस्कृति के सामने नई संभावनाएँ खोली हैं। लोकगीत, सांग, लोककथा और सांस्कृतिक कार्यक्रम अब मोबाइल फोन के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुँच सकते हैं। डिजिटल माध्यम संस्कृति के संरक्षण का प्रभावी साधन बन सकता है। गाँवों की पुरानी इमारतों, पारंपरिक औजारों, लोककलाओं और मौखिक इतिहास की वीडियो रिकॉर्डिंग की जा सकती है। लेकिन डिजिटल प्रस्तुति में संस्कृति के सरलीकरण का खतरा भी है।

लोकपरंपरा को केवल मनोरंजन अथवा 'लोकल स्टाइल' में बदल देने से उसका सामाजिक संदर्भ समाप्त हो सकता है।इसलिए डिजिटल अभिलेखन में वक्ता, स्थान, समय, बोली और संदर्भ का रिकॉर्ड रखना आवश्यक है। समुदाय की सहमति और सांस्कृतिक स्वामित्व का सम्मान भी किया जाना चाहिए।

आधुनिकीकरण और सांस्कृतिक परिवर्तन

आधुनिकीकरण ने खादर संस्कृति के लगभग प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। ट्रैक्टर और मशीनरी ने कृषि–श्रम बदला, पक्के मकानों ने पारंपरिक आवास बदले, शिक्षा ने सामाजिक आकांक्षाएँ बदलीं और सड़क तथा संचार ने गाँव को बाजार से अधिक गहराई से जोड़ दिया।परंपरा में परिवर्तन को केवल सांस्कृतिक पतन नहीं माना जा सकता। अनेक आधुनिक परिवर्तन शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और रोजगार की दृष्टि से सकारात्मक भी हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है जब विकास स्थानीय पर्यावरण और सांस्कृतिक स्मृति की उपेक्षा करता है। नदी–क्षेत्र में अनियोजित निर्माण, भूजल का अत्यधिक दोहन और पारंपरिक जलस्रोतों की उपेक्षा भविष्य के लिए चुनौती हैं। इसलिए विकास का ऐसा मॉडल आवश्यक है जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ सांस्कृतिक और पर्यावरणीय स्थिरता भी सुनिश्चित हो।

पड़ोसी सांस्कृतिक क्षेत्रों से संबंध

खादर संस्कृति किसी बंद सीमा में विकसित नहीं हुई। बाँगर, बागड़, ब्रज, कौरवी, अहीरवाल और मेवात जैसे क्षेत्रों के साथ निरंतर सांस्कृतिक संपर्क रहा है। भारत सरकार ने भी हरियाणा की सांस्कृतिक विविधता को अनेक क्षेत्रीय अंचलों के रूप में रेखांकित किया है। भाषा, विवाह, व्यापार, धार्मिक यात्राओं और लोकसाहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक तत्व एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में पहुँचते हैं। इस कारण खादर संस्कृति में अनेक साझा हरियाणवी विशेषताएँ दिखाई देती हैं। सांस्कृतिक सीमाएँ राजनीतिक सीमाओं की अपेक्षा अधिक लचीली होती हैं। किसी गीत, कथा, भोजन या धार्मिक परंपरा का प्रसार प्रशासनिक सीमा से नहीं रुकता। अतः खादर संस्कृति का अध्ययन सांस्कृतिक अलगाव की बजाय सांस्कृतिक अंतःक्रिया के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए।

निष्कर्ष

खादर संस्कृति आज अनेक चुनौतियों से गुजर रही है। पारंपरिक लोककलाओं का कमजोर होता बाजार, मौखिक परंपराओं का पीढ़ियों के बीच कम हस्तांतरण, कृषि में परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट, युवाओं का प्रवास और डिजिटल संस्कृति इसके सामने प्रमुख प्रश्न हैं। यदि किसी लोकगीत को केवल मंचीय प्रदर्शन के रूप में संरक्षित किया जाए और उसके सामाजिक संदर्भ को भुला दिया जाए तो संरक्षण अधूरा रहेगा। इसलिए सांस्कृतिक संरक्षण का उद्देश्य केवल वस्तुओं को बचाना नहीं, बल्कि जीवित परंपराओं को समुदाय के साथ बनाए रखना होना चाहिए।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि खादर संस्कृति नदी और मनुष्य के दीर्घकालीन संबंध से निर्मित एक बहुआयामी सांस्कृतिक संरचना है। इसकी आर्थिक आधारभूमि कृषि और

पशुपालन .सामाजिक आधार परिवार, ग्राम और सामुदायिक संबंध हैं जबकि सांस्कृतिक अभिव्यक्ति लोकभाषा, लोकगीत, लोककथा, सांग, पर्व, विवाह–संस्कार, भोजन, वेशभूषा, लोककला और धार्मिक विश्वासों में दिखाई देती है। खादर संस्कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका पर्यावरणीय चरित्र है। नदी और बाढ़ से उत्पन्न जोखिमों के साथ तालमेल स्थापित करना यहाँ के लोकज्ञान का केंद्रीय तत्व रहा है।

भविष्य में खादर संस्कृति के संरक्षण के लिए गाँव–स्तरीय सांस्कृतिक अभिलेखागार, मौखिक इतिहास परियोजनाएँ, लोककलाकारों का दस्तावेजीकरण, स्थानीय बोली के डिजिटल संग्रह, विद्यालयों में क्षेत्रीय संस्कृति का अध्ययन तथा विश्वविद्यालयों में अंतर्विषयक शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आधुनिक तकनीक को संस्कृति का विरोधी मानने की बजाय उसके संरक्षण के माध्यम के रूप में उपयोग किया जा सकता है। साथ ही संस्कृति को केवल अतीत की वस्तु न बनाकर वर्तमान जीवन की सक्रिय प्रक्रिया के रूप में देखना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, डी. पी. एवं ए. घोष (सम्पा.), रेडियोकार्बन एंड इंडियन आर्कियोलॉजी, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, बंबई, 1973
2. बाशम, ए. एल., द वंडर दैट वाज इंडिया, सिडग्विक एंड जैक्सन, लंदन, 1954
3. केनोयर, जोनाथन मार्क, एंशिएंट सिटीज ऑफ द इंडस वैली सिविलाइजेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस एवं अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ पाकिस्तान स्टडीज, कराचीध्ऑक्सफोर्ड, 1998
4. पॉसेल, ग्रेगरी एल., द इंडस सिविलाइजेशन : ए कंटेम्परारी पर्सपेक्टिव, अल्टामीरा प्रेस, वॉलनट क्रीक, कैलिफोर्निया, 2002
5. शर्मा, जी. आर., "मेसोलिथिक लेक कल्चर्स इन द गंगा वैली, इंडिया", गंगा घाटी के पुरातात्त्विक एवं पर्यावरणीय विकास से संबंधित शोध–अध्ययन
6. सिंह, आर. एल. (सम्पा.), इंडिया : ए रीजनल ज्योग्राफी, नेशनल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, वाराणसी, 1971
7. हरियाणा सरकार, कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा की लोकसंस्कृति एवं लोक रंगमंच संबंधी सामग्री, चंडीगढ़, हरियाणा सरकार, विभिन्न वर्ष।
8. भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो, हरियाणा के भौगोलिक एवं पारिस्थितिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों संबंधी सामग्री, नई दिल्ली, भारत सरकार, विभिन्न वर्ष।
9. गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणवी भाषा एवं लोकसाहित्य संबंधी अध्ययन–सामग्री, हिसार, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, विभिन्न वर्ष।
10. चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद, हरियाणा की लोकसंस्कृति एवं सांस्कृतिक उत्सव संबंधी सामग्री, जींद, चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, विभिन्न वर्ष।

11. हरियाणा की लोककथा, लोकगीत, लोककला एवं लोकवेशभूषा संबंधी प्रकाशित अध्ययन, विभिन्न लेखक एवं संपादक, विभिन्न प्रकाशक, हरियाणा, विभिन्न वर्ष।
12. हरियाणा के क्षेत्रीय सांस्कृतिक अंचलों– खादर, बाँगर, बागड़, अहीरवाल, मेवात एवं ब्रजकृपर उपलब्ध समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अध्ययन, विभिन्न लेखक, विभिन्न प्रकाशक, विभिन्न वर्ष।
13. डी. पी. अग्रवाल एवं ए. घोष (सम्पा.), रेडियोकार्बन एंड इंडियन आर्कियोलॉजी, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, बंबई, 1973
14. ए. एल. बाशम, द वंडर दैट वाज इंडिया, सिडग्विक एंड जैक्सन, लंदन, 1954
15. जोनाथन मार्क केनोयर, एंशिएंट सिटीज ऑफ द इंडस वैली सिविलाइजेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस एवं अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ पाकिस्तान स्टडीज, 1998
16. ग्रेगरी एल. पॉसेल, द इंडस सिविलाइजेशन : ए कंटेम्परारी पर्सपेक्टिव, अल्टामीरा प्रेस, वॉलनट क्रीक, कैलिफोर्निया, 2002
17. आर. एल. सिंह (सम्पा.), इंडिया : ए रीजनल ज्योग्राफी, नेशनल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, वाराणसी, 1971
18. हरियाणा सरकार, कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा की लोकसंस्कृति एवं लोक रंगमंच संबंधी सामग्री, चंडीगढ़, हरियाणा सरकार, विभिन्न वर्ष।
19. भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो, हरियाणा के भौगोलिक एवं पारिस्थितिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों संबंधी आधिकारिक सामग्री, नई दिल्ली, भारत सरकार, विभिन्न वर्ष।
20. गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणवी भाषा एवं लोकसाहित्य संबंधी अध्ययन–सामग्री, हिसार, विभिन्न वर्ष।
21. चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद, हरियाणा की लोकसंस्कृति एवं सांस्कृतिक उत्सव संबंधी सामग्री, जींद, विभिन्न वर्ष।
22. हरियाणा की लोककथा, लोकगीत, लोककला एवं लोकवेशभूषा संबंधी प्रकाशित अध्ययन, विभिन्न लेखक एवं प्रकाशक, विभिन्न वर्ष।
23. हरियाणा के क्षेत्रीय सांस्कृतिक अंचलोंकृखादर, बाँगर, बागड़, अहीरवाल, मेवात एवं ब्रजकृपर उपलब्ध समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अध्ययन, विभिन्न लेखक एवं प्रकाशक, विभिन्न वर्ष।
24. भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो, हरियाणा के भौगोलिक एवं पारिस्थितिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों संबंधी सामग्री, नई दिल्ली, भारत सरकार, विभिन्न वर्ष।
25. हरियाणा सरकार, कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा लोक रंगमंच संबंधी सामग्री, चंडीगढ़, हरियाणा सरकार, विभिन्न वर्ष।